कहानीद्वारा भाषाई कौशल का विकास

शुभांगी तानाजी तावरे
३७ सन्मतिनगर, महाराजा मंगल कार्यालय के पास, फलटण, जिला- सातारा

एक था राजा,
एक थी रानी
दादी माँ, सुना एक
अच्छी-सी कहानी।

आत्मविश्वास, शब्द भंडार और जिज्ञासा बढाने के लिये, भाषा सीखने, बोलने के लिये कहानी सुनना-सुनाना उपयुक्त होता है। कहानी बच्चों के भाषाई कौशल के विकास हेतू महत्वपूर्ण होती है।

छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनना, पढ़ना बेहद पसंद आता है। बच्चोंकी यह रुचि भाषाई कौशल के विकास में मदद पहुँचाती है। आनंद, रोमांच, सौंदर्य, कौतुहल पैदा करती है। अक्सर बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कहानी सुनने के बाद बोध ग्रहण करें, संस्कार सीखें। हर कहानी से बोध ले यह जिद क्यों? केवल मनोरंजन के लिए और खुबसूरत दुनिया को जानने के लिए भी तो कहानी सुन सकते हैं। प्रसिद्ध बाल-लेखिका ताराबाई मोडकजी के अनुसार सिर्फ बोध के लिए कहानी सुनाना ठीक नहीं। हाँ, वे अपने आप बोध ले सके तो अच्छा हैं।

उपक्रम का उद्देश्य

१. बच्चों में कहानियों के प्रति रूचि बढ़ाना।
२. मनोरंजनात्मक तरीके से हिंदी भाषा का विकास।
३. कहानी में आए कुछ शब्दों के अर्थ; उनका अंग्रेजी, मराठी में अर्थ, स्पेलिंग लिखवाना जिससे शब्द भंडार में वृद्धि हो।
४. कहानी का नाट्यीकरण कराना, अधूरी कहानी पूरी कराना।
५. समूह में काम कराना और छात्रों के सुप्त गुणों का पता कराना, उनका आत्मविश्वास बढ़ाना।
६. प्रकृतिप्रेम, पर्यावरणजागृति, मानवता जैसे मूल्य स्वयंप्रेरित भावना से बढ़ाना। साथ ही अंधश्रद्धा, सामाजिक बुराईयों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।
७. सोच व कल्पनाशीलता का दायरा बढ़ाना।

तैयारी और कार्यवाही

बच्चों के मानसिक स्तर के अनुसार (भाषाशैली का ध्यान रखते हुए) कहानियों की रोचक किताबें चुनी जो कुछ पढ़कर सुनाने के लिए, कुछ पढ़ने देने के लिए थी।

पहले एक कहानी सुनाई। उस कहानी में आए कुछ शब्द लिखने के लिए देकर उन शब्दों के अंग्रेजी, मराठी भाषाओं में समानार्थी और विरुद्धार्थी शब्द लिखने को कहा। चाहे

तो वे शब्दकोश की मदद ले सकते हैं। इस तरह बच्चों का व्यक्तिगत शब्दकोश तैयार हुआ। कुछ दिनों बाद शब्दकोश पर चार समूह बनाकर शब्दों की प्रतियोगिता आयोजित की, ताकि बच्चों तक शब्द और अच्छी तरहसे पहुँच सके।

सुनाई गयी कहानी को नाट्यीकरण के रूप में लिखवाकर नाटक प्रस्तुत करने के लिए विचारविमर्श शुरु हुआ कि "नाटक कैसे शुरू करें?" "अंत कैसे करें?" "कौन-से संवाद कौन बोलेगा?" हिंदी में कुछ कमजोर और डरपोक बच्चों को छोटी भूमिका देकर प्रोत्साहन दिया।

सृजनात्मकता बढ़ाने के लिए 'तेजिंदर' यह कहानी नाट्यीकरण के लिए चुनी। बच्चों की सलाह के साथ संवाद लिखने पर संवाद बाँटे। जो बच्चे पढाई में पीछे थे, डरपोक थे वे आकर कहने लगे कि,

"हमें भी नाटक में भाग लेना है।"

"तुम नाटक में कहाँ और क्या संवाद बोलोगे?" तो उन बच्चों ने सुझाया कि "हम दुकानदार बनेंगे, जहाँ तेजिंदर मूँगफली बेचती है। उसकी एक तरफ खिलौने बेचनेवाला या कुली बनेंगे।"

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त इस प्रकार अन्य गतिविधियों की सहायता से कहानियाँ सुनाकर दी गई शिक्षा निश्चित ही आनंददायी शिक्षा होगी। श्रवण, वाचन क्षमता बढ़ेगी। विद्यार्थियों का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

कहानियोंद्वारा जिज्ञासा, उत्साह बढ़ाना

हिंदी की कुछ तासिकाओं में 'कहानी सुनना' बच्चों के लिए एक विशेष आकर्षण होता है। जिम कार्बेट द्वारा लिखित 'रुद्रप्रयाग का नरभक्षक चिता' यह कहानी प्रसंगचित्रों के साथ सुनाइए। ताकि वे समरस होकर आस्वाद ले सकें।

इस प्रसंग में, "जब नरभक्षक चिते को पकड़ने के लिए प्रसिद्ध शिकारी जिम कार्बेट को बुलाया जाता है तब कई दिनों तक तो वह चिता बंदूक की गोली से, कई बार चालाखी से बचा। अतः अगली बार एक विशेष प्रकार का जाल बिछाया। पास ही पेड़ पर जिम कार्बेट बैठे। लेकिन तीन दिन के इंतजार के बाद चौथी रात वह चिता शिकार की तलाश में आया। और जाल के पास आया। आखिर में वह जैसे ही जाल के ऊपर आया, उसके दोनों पैर जाल की कड़ी में बंद हुए। वह तेजी से जाल घसीटते हुए भागने की कोशिश करने लगा। मौके की तलाश में सतर्क बैठे जिम कार्बेटने निशाना साधा" (अब आगे क्या हुआ हम कल सुनेंगे) बीच में ही कहानी रोकने से आगे क्या हुआ? "बताइए ना! वह चिता मर गया क्या?" "चिता जख्मी हुआ क्या?" "शिकारी की बंदूक गिरी क्या?" "शायद चिता पकड़ा गया होगा?" इस प्रकार प्रश्नों की बरसात होती है। छात्र अपनी-अपनी सोच लगाते हैं। छात्र अगली तासिका का बेसब्री से इंतजार करते हुए घर गए।

दूसरे दिन उन्होंने बताया कि, "धूल की वजह से गोली का निशाना लगाने में दिक्कत आई। गोली कड़ी पर लगी। कडी टूटी और वह भाग निकला।" तो बच्चों के हाव-भाव,

प्रतिक्रियाएँ देखने जैसी थी। कई प्रसंग तो बच्चों ने जितनी बार सुनाने को कहा उतनी बार कहानी सुनाई। क्योंकि प्रसिद्ध बाल साहित्य विशेषज्ञा ताराबाई मोडक के अनुसार एकाद प्रसंग बच्चें बार-बार सुनना चाहें तो उन्हें वह अवश्य सुनाए।

उपक्रम में सुनाई और पढ़ने दी हुई कहानियों की सूची-

१) तेजिंदर २) रावीपार ३) प्याज की शॉल ४) टपकां ५) आओ बने ईमानदार ६) वाईज एंड अदरवाईज ७) रुद्रप्रसाद का नरभक्षक चिता ८) दो बैलों की जोडी ९) सुनों सबकी, करो मन की १०) पंचतंत्र की कहानियाँ ११) अग्निपंख १२) चकमक पत्रिका की कहानियाँ

इस प्रकार अनेक कहानियाँ बच्चों में नेक मानवीय भावनाएँ जगाने, उन्हें विवेकशील बनाने का सशक्त साधन हैं। कहानी सुनाने के बाद कहानी में आए कुछ शब्दों को लेकर मराठी, अंग्रेजी एवम् समानार्थी, विरुद्धार्थी शब्दों में बदलकर स्वयंका शब्दकोश बनाने का आकर्षण मेरे लिए अमूल्य उपहार था।

शब्दकोश का नमुना

कहानी का शब्द	मराठी	अंग्रेजी	समानार्थी	विरुद्धार्थी	वचन
डाल	फांदी	Branch	टहनी, शाखा	-	एकवचन
मुश्किल	अवघड	Difficult	कठिन	आसान	एकवचन

व्याप्ती और मूल्यांकन

करीबन ४० दिन (रोज २० मिनट) चलनेवाले इस उपक्रम में सातारा जिले में फलटण तहसील की प्रायोगिक पाठशाला 'कमला निंबकर बालभवन' कक्षा छठी के ३२ छात्र सहभागी थे। उपक्रम में कहानियाँ सुनाने के बाद अंत में एक परीक्षा ली। कहानियों का नाट्यीकरण, प्रार्थना समय में करवाया। इन सभी गतिविधियों के समय छात्र स्वयंस्फूर्ति से सुंदर तरीके से, जिम्मेदारीपूर्ण काम करते थे। नवनिर्मिति का आनंद उन सबके चेहरों पर साफ दिख रहा था।

समूह में नाटक करते समय आत्म-विश्वास, मदद की वृत्ती, अनुशासन बढ़ा। बच्चों के सुप्त गुणों का पता चला। अधूरी कहानी पूरी करते समय लगा कि बच्चों की कल्पनाशक्ति बढ़ी है। बच्चों को इस तरह हिंदी भाषा में सुधार लाने का तरीका आनंददायी साबित हुआ। सभी ने बनाया हुआ शब्दकोश, शब्दकोश का मुखपृष्ठ, जिज्ञासा भरे प्रश्न; साथ ही सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नों के उत्तर खोजकर लाने का उत्साह 'तारीफ-ए-काबिल' था।

इस उपक्रम में बच्चों की क्षमताओं का विकास करना और मौका देना यह मेरे लिए महत्त्वपूर्ण था। उत्साही बच्चों की सक्रियता, सक्रिय अभिकर्ता बनना इस उपक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

***